श्रीसीताराम

❀ श्रीरामानन्द-साहित्य माला, पुष्प ६२ वाँ ❀

श्रीसीताराम-प्रपत्ति-प्रार्थना

1217

+3017

1217

श्रीसीताराम

सम्पादक—

अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव "प्रेमनिधि"
श्रीरामानन्द--आश्रम, जनकपुर धाम (नेपाल)

प्रकाशक—

श्रीफूलबाबा, परमहंस आश्रम

सीतामढ़ी, (बिहार)

द्वितीय संस्करण १०००	सं० २०३२ श्रीविवाह पञ्चमी	मूल्य, सप्रेम नित्य पाठ

श्रीसीताराम

* भूमिका *

अनन्त कल्याण गुणगणागार, अशेषलोकशरण्य, श्रीसाकेत दिव्यधामाधीश्वर श्रीकौशलेन्द्रजू की प्राप्ति के लिये पुरुषकार स्वरूप अनन्त-करुणा, कृपा-दया अनुकम्पा-अनुग्रह-वात्सल्य आह्लादनादि दिव्यगुण परिपूर्ण, सतत चेतन कल्याणोन्मुखी श्री श्री किशोरीजी की शरणागति ही एकमात्र उपाय पूर्वाचार्यों ने प्रसिद्ध किया है। श्रीयुगल प्रभुको पूर्ण रसकेलिका सुख प्राप्त करने की लालसा रखने वालों को उचित है कि प्रतिदिन प्रेम विनय दीनता तथा हृदय को अपार श्रद्धा विश्वास के साथ श्रीकिशोरीजी की प्रार्थना करनी चाहिये।

श्रीयुगल सरकार की अपार करुणा प्राप्त करने की उत्कट उत्कन्ठा रखने वाले उज्वल भावुक भक्तों की इसी परम्परा का अनुसरण कर आत्म-कल्याण साधने की जिज्ञासा वालों को 'श्री-प्रिया-प्रियतम प्रेम प्रदायक प्रपत्ति संग्रह' में से कुछ समर्पण करने की धृष्टता की जाती हैं। इन वाक्यों द्वारा श्री किशोरीजी की प्रार्थना करने वालों को इस दुःखमय संसार में एक अनिर्वचनीय आनन्दप्रद आश्वासन प्राप्त होता है, अपार करुणा का दिव्य अनुभव होता है, श्रीयुगल सरकार की-देव दुर्लभ रूप माधुरी का इसी शरीर से साक्षात्कार प्राप्त होता है। यह सब तो प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पाठ करने वालों को स्वयं अनुभव द्वारा ज्ञात होगा ही, प्रेमीजनों की रुचि हुई तो आगे भी सन्तो की प्रसादी बांटने का प्रबन्ध किया जायगा।

निवेदक:—

अवधकिशोर दास 'श्रीवैष्णव' प्रेमनिधि

श्रीजनकपुर धाम।

श्री साकेतराज वल्लभायै नमः ।

श्री सीताराम प्रभाति प्रार्थना

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
13017
अयोध्या

अथ ध्यानम् ।

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
12417
अयोध्या

कौशेय पीतवसनामरविन्द नेत्रां
रामप्रियाभयवरोद्यत पद्महस्ताम् ॥
उद्यच्छतार्क सदृशीं परमासनास्थां
ध्यायेद्विदेह तनयां सखिभिः सहस्रैः ॥

सुन्दर रेशमी पीताम्बर धारण किये हुए, कमल के समान सुन्दर नेत्रवाली, अभय वरदान देने के लिये सर्वदा उद्यत रहनेवाली, अपने सुकोमल कर में कमल धारण किये, उदय होते हुये दिवाकर की भांति ज्योतिर्मय दिव्य सिंहासन पर विराजमान, हजारों सखियोंके द्वारा सुसेवित श्री श्रीविदेह राजकुमारी जी का प्रेमपूर्वक ध्यान करे ॥ १ ॥

स्वर्णाभामम्बुज करां रामालोकन तत्पराम् ॥
ध्यायेत्षट्कोण मध्यस्थां रामाङ्कोपरि शोभिताम ॥२॥

स्वर्ण की भांति दिव्य देह वाली, श्रीरघुनन्दन आनन्दकन्द की छटा का अवलोकन करनेमें निमग्न श्रीप्रियतमजू के वामाङ्कमें सुशोभित, षट्कोण मध्यस्थ विराजमान, श्रीरामप्रियाजू का प्रेमपूर्वक ध्यान करे ॥ २ ॥

ध्यान संयुक्त वन्दना इस प्रकार करे—

रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थ लालिताम्।
रामाङ्कपीठे राजन्तीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम ॥ ३ ॥

अति रमणीय, राजीवदललोचना श्रीरामभद्रजू के हृदय स्थल में पूर्ण प्रेमसे लालित, श्रीरामजी के अंक पीठ (गोद) में बिराजमान श्री रामवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ॥ ३॥

विदेहतनयां देवीं मन्दस्मित मुखाम्बुजाम् ।
इन्दीवर विशालाक्षीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥४॥

श्री विदेह राजकुमारी, मन्द मन्द हास्यपूर्ण मुखारविन्द वाली, कमल दलके समान विशाल लोचन वाली देवी श्रीराम-कान्ता श्रीकिशोरी जी की मैं प्रेम पूर्वक वन्दना करता हूँ ॥४॥

दिव्य माल्याम्बरधरां तप्त चामी करप्रभाम् ।
चारु चन्द्राभ वदनीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ५ ॥

दिव्य (कभी मलिन न होने वाले) सुन्दराति सुन्दर वस्त्र भूषण तथा मालादि धारण करने वाली, तपाये हुये हेम (सोना) के समान् चमकती हुई कान्ति (प्रकाश) से पूर्ण, शरद्के पूर्ण चन्द्र के समान शोभा सम्पन्न मुखवाली श्रीअवधेश राजकुमार की प्राणवल्लभा श्रीरामप्रियाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥५॥

पद्मासनां पद्महस्तां पद्मपत्र निभेक्षणाम् ।
पद्मालयां पद्मगन्धां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ६ ॥

कमल के सुन्दर आसन पर विराजमान, कमल पुष्प हाथ में धारण किये हुये, खिले हुये कमल दल के समान सुन्दर नयन वाली, कमल के पुष्पों से वनाए हुये कुञ्जों में निवास करनेवाली, कमल के फूलों को सुन्दर सुगंध जिनके श्री अङ्ग

(देह) से सदाही निकलती है, ऐसी श्री राघवेन्द्रजू की प्राण-वल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ६ ॥

हेमपद्म समासीनां नील कुञ्चितमूर्धजाम् ।
तरुणादित्य-सङ्काशां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ७ ॥

सुवर्ण के पद्मासन पर विराजमान, काले घुंघराले सुचिक्कन सुन्दर केशवाली, तरुण आदित्य (सूर्य के समान) दिव्य प्रकाशित शरीरवाली श्रीसाकेतराजवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ७ ॥

विद्युत्पुञ्ज प्रभाभासां सुरासुर नमस्कृताम् ।
त्रयीमयीं सूक्ष्मरूपां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥ ८ ॥

बिजुली के पुञ्ज (समूह) के समान प्रभावाली, सभी सुर-असुरादि प्राणिमात्र से परम वन्दनीय. वेद प्रतिपादित ब्रह्मविद्या स्वरूपिणी, अत्यन्त सूक्ष्म रूप से सर्वत्र स्वशक्ति द्वारा व्यापक श्री साकेताधीश्वरजू की हृदयवल्लभाजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ ८ ॥

चन्द्रमण्डल मध्यस्थां चन्द्र बिम्बोपमाननाम् ।
चन्द्रकोटि प्रभां देवीं वन्दे श्रीराम वल्लभाम् ॥९॥

चन्द्रके आकारके सुन्दर सिंहासन के मध्यमें विराजमान चन्द्रबिम्ब के समान गोल सुन्दर मुखवाली, करोड़ों चन्द्रमा के प्रभाको लज्जित करनेवाली गौर सुन्दरी देवी श्रीरामवल्लभाजू को मैं वन्दना करता हूं ॥९॥

आदि मध्यांत रहितामम्भोरुह निवासिनीम् ।
नाद ब्रह्ममयीं देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥१०॥

आदि-मध्य अन्त से रहित, कमल कुञ्ज में निवास करने

वाली, नाद ब्रह्ममयी देवी श्रीदशरथ राजकुमार जू की प्राणप्रिया जू की मैं वन्दना करता हूं ॥१०॥

यक्ष किन्नर गन्धर्व सिद्ध विद्याधरैः सदा ।
सेव्यमान पदाम्भोजां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥११॥
ब्रह्मेन्द्र वन्दित पदां सृष्टिस्थित्यन्त कारिणीम् ।
परानन्दमयीं रम्यां वन्देश्रीरामवल्लभाम् ॥१२॥

यक्ष-किन्नर-गंधर्व--सिद्ध-विद्याधर आदि भक्तों से जिनके चरणकमल सदा सुसेवित रहते हैं, ऐसी श्री विदेहराज कुमारीजू को मैं वंदना करता हूं ॥११॥

ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्रादि देवगणों से आराधित जिनके चरण सरोरुह हैं, सृष्टिकी उत्पत्ति पालन प्रलयादि काय जिनकी इच्छा मात्र से ही सुसम्पन्न हो जातेहैं, ऐसी परमानन्द परिपूर्ण परम रमणीय श्रीकौशलकुमारजूकी प्राणवल्लभाजू की मैं सदैव वन्दना करता हूँ ॥ १२ ॥

श्रीकिशोरीजी की प्रार्थना इस प्रकार करें :—

कृपारूपिणि कल्याणि राम प्रेयसि जानकि ।
कारुण्य पूर्ण नयनैर्दयादृष्ट्या विलोकय ॥१३॥

हे कृपा स्वरूपिणि ! कृपा रस से ही जिनकी प्रतिमा परिपूर्ण है, ऐसी हे कल्याण मूर्त्ति ! चेतनों का परम कल्याण करने की कामना से अपार दयापूर्ण हृदय जिनका है ऐसी हे श्रीराघवेन्द्रजू की प्राण प्रियतमा, श्रीजनकनन्दनी जू ! एक वार उस अपार-करुणा-दया-कृपा-अनुकम्पा--वात्सल्यादि गुणगणों से छलकते हुये नव नीरद के समान सुन्दर नयनों के कृपा

कटाक्ष द्वारा मेरी ओर निहार कर इस दीन को कृतार्थ कीजिए ॥१३।

सर्वलोक शरण्ये श्रीसीते, वात्सल्य सागरे।
मातर्मैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम् ॥१४॥

समस्त लोकों के चेतनों को शरण देनेवाली, शरणागत जीवोंका सदैव परमकल्याण करनेवाली, वात्सल्य रसपूर्ण अपार अगाध महासागर समान उदार हृदयवाली, अकिञ्चन निस्साधन भक्तजनोंको अति सुलभ जगज्जननी, हे श्रीमिथिलेश राजदुलारीजू ! शरण में आयेहुये मेरी कृपाकर रक्षा कीजिये ।१४॥

कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्यैक स्वरूपिणीम्।
सर्व मङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं व्रजे ॥१५॥

करोड़ों कामदेव के दर्प का चूर्ण करनेवाले अपार रूप लावण्य से सम्पन्न, सुन्दरताकी एकमात्र अप्रतिम मञ्जुल मधुर मनोहर मूर्ति, समस्त मङ्गलों की खान, महामङ्गल मोद विग्रह श्रीधरणीदेवी की कुमारी होकर लीलाभूमिमें प्रकट होनेवाली श्री स्वामिनीजू की शरणागति मैं ग्रहण करता हूं ॥१५॥

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणाम्।
सर्वस्यार्ति हरणैक सुव्रतां शरणं व्रजे ॥ १६ ॥

शरण आये हुये आर्त दीनजन की रक्षा करने में सदैव परायण, सभी जीवोंकी घोर पीड़ाका हरण करनेवाली, चेतन का परम कल्याण करनेकी सुन्दर प्रतिज्ञा रखनेवाली श्रीविदेहराजललीजू की मैं शरण जाता हूं ॥१६॥

सीतां विदेह तनयां रामस्य दयितां शुभाम्।

हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं व्रजे ।१७॥

श्री विदेह राजदुलारी, श्री रघुनन्दन प्राणप्यारी, अति शुभ कल्याण करने वाली, श्री मारुतिकुमारजू द्वारा आश्वासित सुसेवित, भूमि-नन्दिनी-श्रीकिशोरीजू की मैं शरण जाता हूं।१७।

अस्मिन्कलिमलाकीर्णे कालघोरभयार्णवे ।

प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्रामप्रियां विना ॥१८॥

भय-यातनादिकों से परिपूर्ण इस घोर कलिकाल में भयङ्कर भवसागर से पार जाने के लिए जीवों को अन्य कोई कहीं गति आश्रय नहीं है। इस समय तो शरणागत भक्तजनों को केवल श्रीराघवेन्द्रराज महारानी श्रीकिशोरीजू के सुचारु चरण कमल ही एकमात्र आश्रय है ।।१८।।

सदानुग्रह सम्पन्ने श्रीमन्त्रार्थैक विग्रहे ।

कोशलेन्द्रप्रिये देवि रक्षमां जनकात्मजे ॥१९॥

सदैव अनुग्रह से परिपूर्ण, श्री मन्त्रार्थ की विग्रहवान मूर्ति, श्री कोशलेन्द्र कुमार रघुनन्दनजू की प्राण प्रियतमा देवी हे श्री जनकराज नन्दिनीजू! कृपाकर मेरी रक्षा कीजिए ॥१९॥

साम्राज्यमर्पयति भक्तिलवऽप्युदग्र-

प्रेम्णि प्रदर्शयति पाद् सरोज शोभाम्।

विघ्नान्निवारयति या भजतां समन्तात्-

सा जानकी विजयतां कुल देवता नः ।।२०॥

जिनकी लवमात्र थोड़ी सी भक्ति भी सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य समर्पण कर देती है। जिनका प्रेमपूर्वक आराधन करने से उनके चरण कमल की दिव्य छटा की सुन्दर शोभा का परम

सुख प्राप्त होता है तथा जो भजन करनेवालों के सभी प्रकार के सङ्कट विघ्न भली भांति नष्टकर देती हैं। वह हमारी कुलदेवता श्री जनक राजकुमारी जी की सदा जय हो, विजय हो ॥२०॥

सन्तर्जितोऽपि बहुधा परिपीड़ितोऽपि-
सन्ताडितोऽपि च रुषाऽति तिरस्कृतोऽपि।
दीनो रुदन्नशरणस्तव पाद पद्म-
युग्मं शरण्यमभितः शरणं करोमि ॥२१॥

हे श्री किशोरीजो ! आप मुझे भले ही फटकार दें, अनेक प्रकारकी पीड़ा दें, ताड़ना करें, अथवा मुझपर क्रोध करके मेरा अत्यन्त तिरस्कार करें; तो भी मैं तो दीन हूं अशरण हूं, अतएव रोता हुआ आपके ही सर्वतः शरणागत वत्सल चरण कमलोंको अपना शरण (एकमात्र रक्षक-आश्रय) बनाता हूं ॥२१॥

वन्दनात्प्रणतपापकर्षिणीं सेवनादमृतवर्षवर्षिणीम्।
सश्रयादखिलदोष मर्षिणीं जानकी चरणरेणुमाश्रये ॥२२॥

जो वन्दन करने से शरणागत भक्तों का समस्त पाप हरण कर लेतीं हैं, जिनकी सेवा सदैव अमृतरस बरसाती रहती है, जिनका आश्रय अखिल दोष एवं दुखों को नष्टकर देता है ऐसी परम कृपालु श्री किशोरीजीकी चरण रेणुका मैं अवलम्ब ग्रहण करता हूं ॥२२॥

❋ श्रीयुगल प्रभुकी प्रार्थना ❋

संसार सागरान्नाथौ पुत्र मित्र गृहाकुलात्।
गोप्तारौ मे दयासिन्धू प्रपन्न भय भञ्जनौ ॥ १ ॥

हे नाथ ! पुत्र मित्र, घर आदि भयङ्कर जलचरों से संसार रूपी महासागर में आप युगल सरकार मेरे एकमात्र रक्षक हैं। आप श्रीयुगल प्रभु ही शरणागतों का भय भञ्जन करने वाले हैं ॥ १ ॥

योऽहं ममास्ति यत्किञ्चिदिहलोके परत्र च ।
तत्सर्वं भवतोरेव चरणेषु समर्पितम् ॥ २ ॥

मेरा अपना कहानेवाला इस संसार में अथवा आगे परलोक के लिये जो कुछ भी हो वह सब कुछ आप श्रीयुगल सरकार के श्रीचरण कमलों में समर्पित है ॥ २ ॥

अहमस्म्यपराधानामालयस्त्यक्त साधनः ।
अगतिश्चततो नाथौ भवन्तावेव मे गतिः ॥ ३ ॥

मैं समस्त अपराधों का ही घर हूं, शुभ साधनोंका मैंने एकदम परित्याग कर दिया है, इसलिये हे प्रभु ! मेरी और कोई गति तो है ही नहीं, केवल आप प्रिया प्रियतम के सुकोमल चरण ही मेरी एकमात्र गति है ॥ ३ ॥

तवास्मि जानकीकान्त कर्मणा मनसा गिरा ।
रामकान्ते तवैवास्मि युवामेव गतिर्मम ॥ ४ ॥

हे श्री जानकीकान्त ! तन, मन, वाणी से मैं आपका ही हूं हे श्री रामवल्लभाजू मैं आपका ही हूं आप दिव्य दम्पति के सुचारु चरण ही मेरी एकमात्र गति हैं ॥ ४ ॥

शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि करुणा निकराकरौ ।
प्रसादं कुरुतां दासे मयि दुष्टेऽपराधिनी ॥ ५ ॥

हे श्री प्रिया प्रियतमजू ! करुणा के अपार सागर आप युगल प्रभु के चरणों का मैं शरणागत हूँ । महान दुष्ट और अपराधी होने पर भी आप अपना अधम दास समझकर मुझपर दया दृष्टि करने की कृपा करें ॥ ५ ॥

मत्समो नास्ति पापात्मा त्वत्समो नास्ति पापहा ।
इति सञ्चिन्त्य देवेश यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ६ ॥

मेरे समान कोई पापात्मा नहीं है और आपके समान कोई पाप नाश करने वाला नहीं है । ऐसा विचार कर हे प्रभु ! अब आप जैसा उचित समझिये वैसा ही कीजिये ॥ ६ ॥

अन्यथाहि गतिर्नास्ति भवन्तौ हि गतिर्मम ।
तस्मात्कारुण्य भावेन कृपांकुरु दयानिधे ॥ ७ ॥

अन्य कोई भी कहीं भी मेरी गति नहीं है, आपके श्रीचरण ही एक मात्र मेरी गति है । इसलिये हे दयानिधे ! आप करुणा भाव से कृपा करके मुझे अपना लीजिये ॥ ७ ॥

दासोऽहं शेषभूतोऽहं तवैव शरणागतः ।
अपराधितोऽहं दीनोऽहं पाहिमां करुणाकर ॥ ८ ॥

मैं आपका ही दास हूँ, आपका ही शेष (अङ्ग) हूँ, आपके ही शरणागत हूँ, आपका अपराधित हूँ, दीन हूं, हे दयानिधे ! आप मेरी रक्षा करें ॥ ८ ॥

प्रार्थयामि महादीनो दीनोद्धर कृपानिधे ।
एतद्देहावसाने मां सम्प्रापय दयाकर ॥ ६ ॥

हे कृपानिधे ! हे दयासागर ! हे दीनों के उद्धारक ! इस शरीर के अवसान के समय आप कृपाकर स्वयं मुझे अपना कर कृतार्थ करें ॥ ६ ॥

न मे पाप विनिर्मोके न च त्वत्प्राप्ति साधने ।
शक्तिस्तत्र समर्थस्त्वं स्वप्राप्तेः साधनं भव ॥ १० ॥

न तो मुझमें स्वयं पापों से मुक्त हो जाने का बल है, और न आपकी प्राप्ति करने का साधन ही मुझसे बनता है । शक्ति और सामर्थ्य विहीन इस दीन को अपनी प्राप्ति करने के लिये आप ही एकमात्र कृपाकर साधन बनें ॥ १० ॥

* दीर्घ कार्पण्यतामय प्रार्थना *

चाण्डालाचरणेन धर्म्मपिशुना सद्धेषिणा दुर्हृदा ।
नाट्यंमेऽमितजन्मना बहुविधं स्वामिन् धृतं तेऽग्रतः ॥
तुष्टस्त्वं यदि तेन मे रघुपते देह्याश्वतोदर्शनं ।
नोचेन्नाथ निवार्यतांसकृदिदं व्यर्थं त्वयेत्युच्यताम ॥

* बोलो अब तो कुछ बोलो ॥ *

युग २ की साधें तुम्हारे चरणों में आज मनुहार कर रही हैं । प्यारे कुछ भी तो बोलो । मैं सदा से अपनी ही सुनाता आया-तुम चुपचाप सुनते रहे । आज प्यार इस हठ पर तुला

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या

है कि तुम कुछ बोलो। अरे, यह तुम्हारा मौन भारी बोझल होकर मेरे प्राणों पर अपना भार डाल रहा है। आओ, ओ स्नेह की मूर्त्ति! कुछ बोलो। कुछ अपनी सुनाओ। मैं जानूँ कि तुम्हारा भी हृदय है और उसमें भी किसी के लिये व्यथा है। किसी के लिये आग्रह है, किसी के लिये अनुरोध है। आज मेरा हृदय तुम्हारा 'हृदय' देखने के लिये मचल रहा है। आज प्रार्थना, स्तुति, स्तवन स्तोत्र, जप-तप मुझ से कुछ भी न होगा। मैं देख रहा हूं, इन साधनों ने सदा तुम्हें मुझसे दूर-ही-दूर रखा। तुम हम एक न हो पाये। आज इन सबका सहारा छोड़कर, तुम्हारे कन्धे पर हाथ रखकर, तुम्हारी ठोढ़ी को छूकर तुमसे वार-वार यही मनुहार कह रहा हूँ कि तुम कुछ बोलो? बोलो, अब तो कुछ बोलो!

तुम दयालु हो, मेरी ओर न देखकर अपनी कृपा से ही मेरे इस दुष्ट मन को अपनी ओर खींच लो, इसे ऐसे जकड़कर बाँध लो कि यह कभी दूसरी ओर जा ही न सके। मेरे स्वामी ऐसा कब होगा? कब मेरा यह दुष्ट मन तुम्हारे चरणों के दर्शन में तल्लीन होरहेगा? कब यह तुम्हारी मनोहर मूर्त्ति की झांकी करके कृतार्थ होता रहेगा? अब देर न करो। दयामय! जीवन-सन्ध्या समीप है। इससे पहलेही तुम अपनी दिव्य ज्योति से मेरे जीवनमें नित्य प्रकाश फैला दो। इसे समुज्वल बनाकर अपने मन्दिरमें ले चलो और सदा के लिये वहीं रहने का स्थान देकर निहाल कर दो।

मेरे अन्तर्यामी प्रभो! तुम्हारी कृपा से जिस समय मैं पहले पहल साधनों में लगा था, उस समय मेरा भाव बहुत सुन्दर था।

मैं समझता था, सोचता था, "सारा संसार तुमसे भरा है, सब कुछ तुम्हारी ही प्रेरणा से होता है और सर्वत्र तुम्हारी ही शक्ति काम करती है। प्रभो! तुमही मेरे जीवन के एकमात्र लक्ष्य हो। मैं निरन्तर तुम्हारा ही स्मरण करता हुआ अपने सारे कर्म केवल तुम्हारे लिये ही करूंगा। मेरी बुद्धि, मेरा मन, मेरी सारी इन्द्रियां केवल तुम्हारी सेवा में ही लगी रहेंगी। और मैं पल पल में तुम्हारे मधुर प्रेमका दिव्य-स्वाद ले-लेकर मस्त होता रहूंगा। परन्तु आज तो कुछ दूसरी ही बात होगई है। तुम्हारे विराजने के पवित्र आसन पर मैं मोह वश अपने इन अनित्य, अपवित्र और पाप कलुषित जगत के नामरूप को बैठाकर इन्हीं की पूजा करना-कराना चाहता हूँ। मेरी प्रत्येक चेष्टा में आज ममता, अभिमान और आशक्ति का नंगा नाच होरहा है। संसार के भोगों में मेरे मन और प्राण इतने रम गये हैं कि उनमें कभी दोष-बुद्धि भी नहीं होती, फिर त्याग बुद्धि तो कहाँ से होगी? जब तुम्हारा प्यारा स्मरण करने बैठता हूं तभी भोगों के विचित्र विचित्र-चित्र चित्त के सामने दल के दल आजाते हैं और मैं तुम्हें भूलकर उन्हीं को देखने लगता हूँ। उन्हीं में रम जाता हूँ। प्यारे! ऐसा क्यों हो गया? सचमुच प्रभो! मैं पतन की ओर बढ़ा जा रहा हूँ। विद्या-बुद्धि और ज्ञान का अभिमान मुझसे न मालूम कितनी बार पूज्यजनों का अपमान कराता है। अधिकार, प्रतिष्ठा, सम्मान और सुख्याति के जादू ने इतना प्रभाव जमाया है कि तुम्हारे पवित्र स्मरण को भी आवश्यकता का अनुभव मन नहीं करता और न तुम्हें भूल जाने पर वह कभी पश्चात्ताप ही करता है।

दुख तो यह है, कभी-२ यह सब ज्ञान के नाम पर होता है। मेरी धृष्टता और नीचता का पार नहीं है। प्रभो! मेरी यह दुर्दशा कबतक रहेगी ? हाय-हाय ! मेरे प्यारे मुझे बचाओ, मेरी इस दयनीय दशा की ओर दया दृष्टि से देखो। दया करो! मेरा सारा पुरुषार्थ व्यर्थ होगया। संसार के सुख, धन, मान, कीर्त्ति आदि के प्रलोभन ने मेरी साधना को नष्ट कर डाला। मैं आज पुरुषार्थहीन हूँ। अब बस, तुम्हारा हीं भरोसा है। मैं जान गया जो कुछ भी होगा तुम्हारी ही कृपा से होगा। तुम अपनी कृपा से मेरे सारे अनर्थकारी मनोरथ महलों को ढहा दो। मेरे सारे अभावों के अनुभवों का सर्वथा अभाव करदो। मेरा मन नित्य निरंतर तुम्हारे रूप अप्रतिम गुण और पावन नाम पर मतवाला हुआ रहे। मेरी बुद्धि सदा सर्वदा तुम्हारे तत्त्व चिन्तन में ही लगी रहे। मेरी इन्द्रियाँ सर्वत्र सब ओर से केवल तुम्हारी सेवा में संलग्न रहें। मेरी सारी ममता सारी आसक्ति सब ओर से सिमट कर एकमात्र तुम्हीं में आकर स्थिर हो जाय। असल में मेरे मन-बुद्धि और इन्द्रियों पर, अहंकार पर और आत्मा, सब पर, कुछ पर एकमात्र तुम्हारा ही अधिकार हो जाय। तुम मुझे सब प्रकार से अपना लो। मेरे कृपामय स्वामी ! आपका एक अति पतित कृपा भिक्षु कृपा की भीख मांगता है, क्या आप न दीजियेगा ? नहीं तुम कृपामय कृपा अवश्य करोगे।

हे पतित पावन ! हे अशेष, लोक शरण्य, मैं दीन, हीन, मलीन, दुर्जन, क्रूर, कपटी, कामी, कलही, अधम, पतित, दुखी, तप्त और समस्त दुर्गुणोंका एकमात्र विश्रामगृह समान नीचपामर

प्राणी हूं। मैं रात दिन पाप करनाही सीखा हूं। पाप करने में मुझसा कोई भी प्रवीण नहीं है। मेरे जैसा पापात्मा आपको त्रिलोक में भी नहीं मिलेगा। अतः 'हे श्यामसुन्दर, हे कोटि कन्दर्प,लावण्य धाम प्रभु प्यारे, अब तो मुझे अपने मदन मोहन मुखड़े की झांकी एकबार तो अवश्य ही करा दो। हे रघुकुल कैरवचन्द्र ! इस परमातुर, विरह-व्यथित दीन चकोर समान दुखित आंखों को, अपने मुनिमन मोहक मुखचन्द्र की अमृतमयी किरणों द्वारा शान्त तो करदो। हे कृपाघन ! एकबार तो शुष्कातिशुष्क कठोर हृदय पर कृपामृत वर्षा करके उसे प्रेम प्लावित तो करदो। हे प्यारे ! इसमें आपको कुछ कष्ट करनापड़े ऐसा तो मुझे प्रतीत नहीं होता है। आपका संकल्प ही मेरे विरह व्यथित हृदय के लिये पर्याप्त है। मैं तो आपके चरण रज का ही उपासक हूं। मैं आपकी दिव्य रूप माधुरी का ही अभिलाषी हूँ। अतः मुझे तो आपकी सेवा करने ही की अति उत्कट लालसा है। क्या इस व्यथित एक आर्त पतित की आह भरी इस प्रार्थना को स्वीकार करेंगे नाथ !

❋ कवित्त ❋

मन से महीपति के मुंशी मतङ्ग मोह, मदन मोहर्रिर को मदत नित जारी है। क्रोध कोतवाल लोभ नाजिर की मिल्लत सो, ज्ञान मुद्दई की मिसल बिगाड डारी है॥ अहंकार अहल मद करत न भलो रिपोर्ट तृष्णा चपरासी की दसकत नित जारीहै। दीन की अपील यही है युगल सरकार अरजी हमारी आगे मरजी तुम्हारी है॥२॥ दीनी है दरखास्त खास आया हूं तुम्हारे पास,

युगल करकार अर्जी मेरी सुन लीजिये। मैं तो हूँ गरीब मेरे करेगा वकील कौन, आप हैं प्रवीण मिशल मेरी चित्त दीजिये। हारूं तो हाजिर हजूरि में बना रहूं, जीतूं तो युगल चरणों में लगा लीजिये॥ आप सदराला अमला ये सब अदालत के प्रभु आपनी अपील पै न्याय मेरा कीजिये॥२॥ सुनिये विटप प्रभु पुहप तिहारे हम, राखियो हमें तो साथ रावरी बडाई है। तजियो हरष के तो विलग न सोचे कछु, जहाँ जहाँ जैहैं तहाँ दूनों यश गाइहैं॥ सुरन चढ़ेंगे नर सिरन चढ़ेंगे पर, सुकवि अनीश हाथ हाथ में विकाई हैं। देश में रहेंगे परदेश में रहेंगे काहु वेष में रहेंगे तऊ रावरे कहाइ हैं॥ ३॥

श्रीमत्स्वामि श्रीभगवदाचार्यजीमहाराजवेदरत्न विरचितम्

भक्त--सर्वस्वम्

हे मैथिली हृदय पङ्कज भृङ्गराज!
हे स्वीय भक्त जन मानस राजहंस।
हे सूर्य्यवंश विभु वैभव! रामचन्द्र!
त्वत्पाद पङ्कज रजः शरणं ममास्तु॥ १॥

हे मैथिली हृदय पङ्कज कञ्जनाथ!
हे भक्त वत्सल! कृपाकर! राघवेन्द्र!
हे दीनरत्तक! शरण्य! सुख स्वरूप!
त्वत्पाद पङ्कज रजः शरणं ममास्तु॥ २॥

हे मैथिली हृदय भूषण! कान्तकान्ते!
हे नीलपद्म रुचिरांघ्रियुग! स्वयम्भो!

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
13017
अयोध्या

हे विश्वनाथ ! रघुनाथ ! वरेण्यकीर्त्ति !
त्वत्पाद पङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ३ ॥
हे मैथिली हृदय मन्दिर शुभ्र मूर्त्ते !
हे वायु पुत्र परिषेबित--पद्मपाद !
हे आशुतोष ! जगदीश्वर ! भक्तिलभ्य !
त्वत्पाद पङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ४ ॥
हे मैथिली हृदय राजमणे ! रमेश !
हे सर्वग ! प्रणतपालक दीनबन्धो !
सृष्टिस्थिति प्रलयलील ! महानुभाव !
त्वत्पादपङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ५ ॥
हे मैथिली हृदय वल्लभ ! रूपराशे !
हे सर्वद ! श्रुतिवचस्स्तुत ! राघवेश ।
हे पापपुञ्ज दहनानल देव देव !
त्वत्पादपङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ६ ॥
हे मैथिली हृदयहार ! मनोजमूर्त्ते !
हे सर्वरीशविमलानन ! सर्वशक्ते ।
हे भक्तवश्य ! करुणालय ! नित्यभूते !
त्वत्पाद पङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ७ ॥
हे मैथिली हृदयवास ! जगन्निवास !
हे भूमिभार हृदनीश ! जगच्छरण्य !
हे राम ! हे रघुपते ! रघुवीरधीर !
त्वत्पादपङ्कज रजः शरणं ममास्तु ॥ ८ ॥

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
12417
अयोध्या

आचार्य सार्वभौम यतिराजसम्राट् श्रीरामानन्दाचार्य प्रणीत

❀ श्रीसीताराम प्रपत्ति--प्रार्थना पञ्चकम् ❀

श्रीमन्तं श्रुति वेद्यमद्भुतगुणग्रामाग्र्य रत्नाकरं-।
प्रयः स्वेक्षण संसुलज्जित महीजाताच्चिकोणेक्षितम् ।
भक्ताशेष मनोभिवाञ्छितचतुर्वर्गं प्रद स्वद्रुमं-
रामं स्मेरमुखाम्बुजं शुचिमहानीलाश्म कान्तिं भजे ॥१॥
ऐश्वर्यं यदपाङ्गसंश्रयमिदं भोग्यं दिगीशैर्जग-
च्चित्रं चाखिलतमद्भुतं शुभ गुणा वात्सल्य सीमा च या ।
विद्युत्पुञ्जसमान कान्तिरमितक्षान्तिः सु पद्मेक्षणा-
दत्तानोऽखिल सम्पदो जनकजा रामप्रिया साऽनिशम् ॥२
प्रत्यूहव्यूहभङ्गं विदधदुरुबलं शक्तिमान्सर्वकारी-
भूरि श्रेयः प्रतापो मुनिवर निकरैः स्तूयमानो विमानः ।
रक्षो दैत्यादिनाशी क्षुभितजलनिधिर्लोकजल्लोकमान्यो-
धन्यो नो मङ्गलौघं सपदि स कुरुताद्रामशस्त्रास्त्रसङ्घः ॥३
जगत्पते श्रीश जगन्निवास प्रभो जगत्कारण रामचन्द्र !
नमो नमः कारुणिकाय तुभ्यं पादाब्जयुग्मे तव भक्तिरस्तु॥४
मनोमिलिन्दस्तव पादपङ्कजे रामचिते संरमतां भवे भवे ।
यशः श्रुतौ ते ममकर्णयुग्मकं त्वद्भक्तसङ्गोऽस्तु सदा मम प्रभो॥

--श्री वैष्णवमताब्जभास्करः ।

स्तोत्र पाठ के सम्बन्ध में दो शब्द ।

प्रतिदिन भगवान का दर्शन करना जैसे भावुक वैष्णवों का भक्तों का परमावश्यक कर्त्तव्य है, वैसे ही भगवत्स्तोत्रों का पाठ करना भी श्रेयस्कर है। जैसे भगवद्दर्शन से अनेक जन्मार्जित पातकोंका बिनाश और पुण्य का उदय होता है, सांसारिक समस्त सुखों तथा शान्ति का लाभ होता है एवं अंत में भगवद्धाम की प्राप्ति होती है, वैसे ही भगवत्स्तोत्रों का पाठ करने से भी निखिलकल्मष विनष्ट होकर अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। हृदय शुद्ध होता है। बुद्धि निर्मल होती हैं। भगवानमें सद्भक्ति होती है। हृदय में भगवान का अनुभव होता है। अतः भगवद्-दर्शन और भगवत् स्तोत्रों का पाठ करना मोक्षप्रद कार्य है। अतएव भगवत्प्रेमी जनों के लाभार्थ यह 'श्री सीताराम प्रपत्ति प्रार्थना' प्रकाशित हुई है। आशा है, भगवत्स्नेही जन भगवान् के मन्दिर में अथवा पवित्र एकान्त स्थान में इस स्तोत्र का पाठ कर कल्याण लाभ करेंगे।

*** राग कल्यान ***

जनकलली मधुरे स्वर गावैं ॥

नइ नइ तान सुनावैं सहचरि, चन्द्रकला अलि बीन बजावैं ।
कोउ अलिमधुर मृदङ्ग बजावैं, कोउ सखि रीझि रीझि गुनगावैं ॥
कोउ सखि रैन दिवस सुधि भूली, कोउ सखि मुखपर भौंर उड़ावैं ।
राजकिशोरि विराज महल में, बिन सखियन कोउ जान न पावैं ॥
'सूरकिशोर' बलैया लेहीं, कोउ सखि व्याह की बात चलावैं ॥

मुद्रकः— मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।